अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्
अहिंसा परमो धर्मः
स्थापित 1923

मूल्य 5/- रु.

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का मुखपत्र

मासिक
# वीर

संस्थापक : ब्र. स
वीर निर्वाण स
वर्ष : 83
अक्टूबर,
वीर निर्वाणोत्सव एवं



**वीर निर्वाणोत्सव**
एवं
**दीपावली**
के मंगल अवसर पर भगवान महावीर
के ... में कोटि ... मन और

**नरेन्द्र मोदी की सरकार का नया**

# जैन धर्म का स्वतंत्र अ
# समाप्त करने की घृणित

**देश भर में जैन समाज आक्रोशित एवं**

गुजरात की नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा पुरातन दिगम्
श्री गिरनारजी की पहचान मिटाने के कुचक्र को अघोषि
करने के आघात के पश्चात्, वर्ष 2003 में गुजरात सर
धर्मांतरण विरोधी कानून में संशोधनार्थ, भारतीय जनता पा
बल पर, अन्य सभी राजनीतिक दलों द्वारा भारी विरोध
नया प्रतिघात करते हुए एक संशोधित बिल पारित कराय
अनुसार जैन एवं बौद्ध धर्म की धार्मिक स्वतंत्रता और अ
रूप से हनन करते हुए, इन्हें हिन्दू धर्म का उसी प्रकार अंश
इस्लाम का अंश सिया और सुन्नी हैं तथा ईसाई धर्म क
और प्रोटेस्टैंट हैं।

नरेन्द्र मोदी द्वारा गिरनार मामले में जैन समाज प
पश्चात, पुनः यह नवीन आघात कर, जैन धर्म के स्वतंत्र अ
देने के अपने कुत्सित संकल्प को उजागर कर दिया गय
भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व की इस पर आश्च
कहीं इस बात के भी संकेत मिलते हैं कि यह दल अब
हिन्दू दल का रूप ले रहा है और अटल बिहारी वाजपेयी
आडवाणी जैसे उदारपंथी राष्ट्रवादी नेताओं को कूड़ेदान में
है। नरेन्द्र मोदी के इस कारनामे से सम्पूर्ण देश का जैन
आक्रोशित एवं आंदोलित हो रहा है। इस मुद्दे पर भाजपा
का स्पष्टीकरण अभी भी अपेक्षित है। विगत चुनाव में
व्यापक समर्थन प्राप्त भाजपा के नरेन्द्र मोदी और उन जै
वाले नए नेता अब शायद अपने दल को हिन्दू राष्ट्र के प्र
'हिन्दू महासभा' जैसे उग्रवादी दल के स्वरूप में वापस ले
यदि उनका मन्तव्य सचमुच ऐसा विकृत है तो वे यह न भू
भी वही हश्र हो सकता है जो कि 'हिन्दू महासभा' का हु
समय है कि भाजपा और गुजरात सरकार अपने इस कुकृत
जैन एवं बौद्ध समाज से सार्वजनिक क्षमायाचना करें अ
भारतीय जनता पार्टी और जैन समाज को आमने-सामने

२. (क) **महोबा**—से प्राप्त २४ तीर्थङ्करोंका अजितनाथ, मूलनायक युक्त पट्ट सचित्र, अहिंसा वाणी १९५९। पृ० ३६३।

(ख) महोबामें कुआँ खोदनेसे २४ तीर्थङ्करोंका पट्ट, दि० जैन डायरेक्टरी बम्बई १९१४, पृ० २३५।

(ग) महोबेकी पहाड़ियोंमें चन्देल-किलोंके निकट नेमिनाथकी १९५६ ई० की और अजितनाथकी १९६७ ई० की मूर्तियाँ सर्वे रिपोर्ट भाग २१, पृ० ७३।

(घ) महोबेके मन्दिर और मूर्तियाँ, जैन एन्टीक्वेरी दिसम्बर १९६८, पृ० १७।

(ङ) जैन धर्म और चन्देल राजे, जैन एन्टीक्वेरी भाग २५, पृ० १६ से २२।

३. **चन्देरी**—२४ तीर्थङ्करोंकी उसी रंगकी मूर्तियाँ जो रंग उनके शरीर का था।

४. (क) **बूढ़ी चन्देरी**—से सुपार्श्वनाथ चन्द्रप्रभू आदि तीर्थङ्करोंकी २१ मूर्तियाँ पुरातत्त्व विभागकी खुदाईपर प्राप्त, कनिंघम, सर्वे रिपोर्ट, भाग २, पृ० २०४।

(ख) बूढ़ी चन्देरीके प्राचीन जैन मन्दिर और मूर्तियाँ, अनेकान्त १।३१८।

(ग) बूढ़ी चन्देरीके निकट वेतवा नदीके किनारेकी वीठला ग्रामसे माणिक रत्नकी पद्म प्रभुकी ५ इञ्च ऊँची मूर्ति प्राप्त, अहिंसा वाणी १९५९, पृ० ३६४।

(घ) बूढ़ी चन्देरीके ७५ जैन मन्दिर। एकमें पानी झरता रहता है जिसमें स्नान करनेसे कोढ़ दूर हो जाता है। विदेशोंका वैभव, पृ० २०९।

५. **जसो**—प्राचीन जैन मूर्तियोंका नगर, जहाँ खोदो वहाँ जैन मूर्तियाँ, खण्डहरोंका वैभव।

६. **सैरौन**—ललितपुरसे ६ मील, ६ जैन मन्दिर, १ हजार वर्षसे भी अधिक प्राचीन, शान्तिनाथकी २० फुट उत्तुंग मूर्ति, दिल्ली जैन डारेक्टरी, पृ० १३५।

७. **खन्दार**—में चट्टान काटकर गुफामें तीर्थङ्करोंकी मूर्तियाँ। देहली डायरेक्टरी, पृ० १३५।

८. **थूबौन**—चन्देरीसे ९ मील २५ दि० जैन मन्दिर। एकमें हनुमानजीकी उनके पिछले जन्मके शत्रुने प्रचण्ड अग्निमें फेंक दिया था, मूर्ति जो २ दिगम्बर जैन नग्न मुनियोंको जिनको अपनी विद्याबलसे दहकती हुई अग्निसे निकालकर आकाशमें ले जाते हुए दिखाया गया है। जैसा कि कहा भी है। "जब रामने हनुमानको गढ़ लंक भिजवाया। सीताकी खबर लेनेको तुरन्त सिधाया॥ मार्गमें दो मुनि लख आगमें काया हनुमाने उन्हें उपसर्ग से बचाया॥

९. (क) **नवागढ़**—संग्रहालयकी जहाँ सर्प फण युक्त पार्श्वनाथकी कुण्डली आसनपर कलापूर्ण मूर्ति, अनेकान्त फरवरी १९६३, पृ० १७७।

(ख) नवागढ़ संग्रहालय नीरज जैन, अनेकांत १५।३३७।

(ग) नवागढ़ एक महत्त्वपूर्ण जैन तीर्थ, अनेकांत फरवरी १९५६, पृ० २७७।

१०. (क) **द्रोणगिरि**—डॉ० विद्याधर जोहरापुरकर, अनेकांत, १७।१२३।

(ख) द्रोणगिरि सिद्ध क्षेत्र कमेटी द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट।

११. **नरसर**—से प्राप्त अभिनन्दन, सुमतिनाथ, पुष्पदन्त, श्रेयांश, बिमलनाथ, अनंतनाथ, पद्मप्रभु, धर्मनाथकी मूर्तियाँ। भूगर्भसे प्राप्त, जो आज भी शिवपुरी जिला पुरातत्त्व संग्रहालयमें सुरक्षित हैं।

१२. **नरवर**—चन्देलवंशी नरेशके महायोद्धा सेनापति उदलकी ससुराल थी। जहाँसे एक शिला-लेख मिला है जो ग्वालियर संग्रहालयमें है। जिसमें कथन है कि यहाँ अनेक विशाल जैन मन्दिर थे। अनेकांत १९७०, पृ० ११०।

नमूनेके तौरपर इनका एक भजन यहाँ दिया जाता है—

श्री जिनवर-सूत्र-समुद्रमें, कर क्रीडा धीधारी ।। टेक ।।
शब्द अर्थरूपी सुरत्नजुत, नय-तरंग उठ भारी ।
मुनि-मुख धुनि गंभीर नाद है, पद गन नीर विचारी ।।
उत्पादिक व्ययध्रौव्य सुचरचा, सलिल ठेल मलछारी ।
सप्तभंगवानी अतरा जन, भविजनको हितकारी ।।
बौद्धादिक पदमतकी कथनी, सो जलचर विचरारी ।
सम्यक्ज्ञान जिहाज बैठकर, पैठश्रवन रिधधारी ।।
चारितरूप पताका फरहर, गनधर दिवउ पारी ।
सुकलध्यान उरधार छार विधि, जाय वरें शिवनारी ।।
श्री जिनवानी उदधि विधि-रज-हर, अधम-उधारन-हारी ।
गोपी कर अभ्यास सूत्रकौ, जन्म जरा गद टारी ।।

जिस प्रकार पं० देवीदासजीने अपने वंश आदिका विस्तृत परिचय दिया है, उस प्रकारसे पं० गोपीलालजीने अपना कुछ भी परिचय नहीं दिया है। भजनोंके अन्तमें केवल इतना लिखा है—

**दोहा—फूलचन्द उपदेश कर, विनती गोपी कीन ।**
**भूल-चूक सब शुद्ध कर, सीखैं बुद्धि-प्रवीन ।।**

इससे ज्ञात होता है इनकी रचनाओंमें श्रीफूलचन्द्रजीकी प्रेरणा रही है। भजन-पोथीकी अन्तिम पुष्पिका इस प्रकार है—

"इति श्रीपदपंकज गोपीलालकृत भजन संपूर्ण। सं० १९१२ मिति चैत वदी ३०। लिखितं पं० श्रीचौबे हजारी, मुकाम मऊ"।

## बाबा दौलतरामजी

दि० जैन समाजमें 'दौलतरामजी' नामसे प्रसिद्ध तीन विद्वान् हुए हैं। इनमें प्रथम दौलतरामजी वसवा ( राजस्थान ) निवासी खण्डेलवाल जैन थे। इन्होंने पद्मपुराण, पुण्यास्रवकथाकोष आदि ग्रन्थोंकी भाषा-वचनिकाएँ लिखी हैं, तथा मौलिक ग्रन्थ क्रियाकोषकी रचना की है। इनकी रचनाएँ वि० सं० १७७७ से से १८२९ तक की पाई जाती हैं। दूसरे पं० दौलतरामजी हैं, जिन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ छहढालाकी रचना वि० सं० १८९१ की वैशाख शुक्ला ३ को पूर्ण की है। इसके अतिरिक्त इन्होंने सैकड़ों आध्यात्मिक, उपदेशी एवं हजूरिया भजनोंकी भक्तिपूर्ण रचना भी की है। इनका समय वि० सं० १८५५ से लगाकर १९२४ तक माना जाता है। आप सासनी, जिला हाथरस ( उ० प्र० ) के रहने वाले थे, पल्लीवाल जैन थे और कपड़ोंकी छपाई करके अति सीमित आमदनीमें ही सन्तुष्ट रहते थे। तीसरे बाबा दौलतरामजी हैं, जो कि बुन्देलखण्डके निवासी थे। इनके जाति, वंश, जन्मस्थान और मरण-समय आदि मेरे लिए अज्ञात हैं। ये अत्यन्त उदासीन, वैराग्यवृत्तिके धारक महान् विद्वान् थे। इन्होंने सिद्धान्त ग्रन्थ गो० जीवकाण्डकी हिन्दीके विविध छन्दोंमें पद्यानुवाद किया है। इसकी जो प्रति ऐ० पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवनमें विद्यमान है, उसमें इसकी रचनाका समय इस प्रकार दिया है—

'इस ग्रन्थकी मूल कापीकी प्रतिलिपि श्री शुभ मिती आश्विन सुदी ४ विकम संवत् १९५९ शालिवाहन

शक संवत् १८२४ हिजरी सन् १३१९ ई० सन् १९०२ में सम्पूर्ण हुई।

इनके प्रत्यक्षदर्शी लोगोंसे बचपनमें मैंने उनकी त्यागवृत्तिकी अनेक गुण-गाथाएँ सुनी हैं। इन्होंने अनेक चौमासे बमराना ( झाँसी ) में किये हैं और अपने सीमित दिग्व्रतके अनुसार जीवन अन्तिम दिन बुन्देलखण्डमें ही व्यतीत किये हैं।

इनके व्रत-नियमोंकी एक छोटी-सी पोथी जो उपलब्ध हुई है, उसमें ३७ छन्दोंके द्वारा उनके नियमोपनियमोंकी विस्तृत जानकारी मिलती है। उसे अविकल रूपसे 'सन्मति सन्देश' के वर्ष १६ के प्रथम अंकमें प्रकाशित किया गया है, जिसका सार इतना है कि श्रावकके १२ व्रतोंके धारी थे। उनका परिग्रहप्रमाण—वस्त्र ओढ़ने-पहरनेके १५ गज प्रमाण, दो आसन चटाईके, एक जलकी चरी मय ढक्कनके, शास्त्रोंकी एक पेटी और ४ आनाके पोस्टकार्ड। उनका दिग्व्रत-पूर्वमें बुन्देलखण्डस्थ कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र, उत्तरमें पपौरा, पश्चिममें ललितपुर, सीरोन होते हुए चन्देरी थूवोनजी और दक्षिणमें बीना-टड़ा ( सागर ) होते हुए वापिस कुण्डलपुर तक।

उनके भोगोपभोगपरिमाण शिक्षाव्रतको भी देखिये—गेहूँ, चावल और मूँगके सिवाय सभी अन्नोंका त्याग, हरी मेंथी और सेमके सिवाय सभी शाक-भाजियोंका त्याग, सूखा आंवला, सूखा अमचुर, आठ पहरका घी, सेंधा नमक, दाख, जीरा, लौंग, मैथीदाना, अजवाइन और पानी इन १५ वस्तुओंके सिवाय सर्वप्रकारके भोज्य पदार्थोंका त्याग था। छहों रसमेंसे एक दिनमें एक ही रसके लेनेका नियम था। अपने सभी कार्योंमें सीमित ही प्रासुक जलका उपयोग करते थे। सचित्त सवारीका भी त्याग था।

यहाँपर उनके गो० जीवकाण्डकी छन्दोबद्ध रचनासे दो उदाहरण दिये जाते हैं—

**अक्षर समास और पद श्रुतज्ञानका स्वरूप : १ :**

गाथा—एयक्खरादु उवरिं एगेगेणक्खरेण वड्ढंतो।
संखेज्जे खलु डड्ढे पदणामं होदि सुदणाणं ॥३३४॥

चौपाई—इक अक्षरज ज्ञान ऊपरै, इक इक वर्णहिं बधते खरै।
वरण संखवृद्धीयें होय, पदनाम श्रुतज्ञान जु सोय॥

**अनाकार उपयोगका स्वरूप : २ :**

गाथा—इंदियमणोहिणा वा अत्थे अविसेसदूण जं गहणं।
अंतोमुहुत्तकालो उवजोगो सो अणायारो ॥६७४॥

गीतिका—नेत्र इन्द्रिय रूप चक्षु, अचक्षु शेष करण पुना,
मनरूप वा दर्शन अवधि, इनसे जियादि पद तना।
हृत विशेष रू विकलप-विमुक्त जु ग्रहण है सामान्य ही,
सो अन्तमुहुरतमात्र थितिधृत निराकार कहा सही॥

बाबा दौलतरामजीकी इच्छा गो० कर्मकाण्डके भी पद्यानुवाद करनेकी थी, पर हम लोगोंके दुर्भाग्यसे वह पूरी नहीं हो सकी।

बाबाजीकी उक्त नियमपोथीके प्रारम्भमें ग्यारह प्रतिमाओंका स्वरूप भी छन्दोबद्ध किया है। उनकी यह रचना अभी तक अप्रकाशित है, अतः यहाँपर स्व० क्षुल्लक चिदानन्दजी महाराजकी स्मृतिमें प्रकाशित किया जाता है—